विषयानुक्रमणिका

- घोषणा पत्र
- प्रमाण पत्र
- भूमिका

प्रथम अध्याय : भारतीय संस्कृति एवं दर्शन

1.1 भारतीय संस्कृति : परिभाषा एवं स्वरूप

1.2 भारतीय संस्कृति : आर्य–आर्येत्तर संबंध

1.3 भारतीय दर्शन : स्वरूप

1.3.1 भौतिकवादी दर्शन

1.3.1.1 लोकायत दर्शन

1.3.1.2 बौद्ध दर्शन

1.3.1.3 जैन दर्शन

1.3.2 अध्यात्मवादी दर्शन

1.3.2.1 सांख्य दर्शन

1.3.2.2 योग दर्शन

1.3.2.3 न्याय दर्शन

1.3.2.4 वैशेषिक दर्शन

1.3.2.5 मीमांसा दर्शन

1.3.2.6 वेदांत दर्शन

1.3.2.6.1 अद्वैतवाद

1.3.2.6.2 विशिष्टाद्वैत

1.3.2.6.3 द्वैतवाद

1.3.2.6.4 द्वैताद्वैत

1.3.2.6.5 शुद्धाद्वैत

द्वितीय अध्याय : भक्ति आंदोलन

2.1 भक्ति का स्वरूप

2.2 भक्ति आंदोलन का विकास

जैन एवं बौद्ध धर्म पर ब्राह्मणवाद का प्रभाव

बौद्ध धर्म का क्षय

भक्ति का निर्गुण एवं सगुण स्वरूप

भक्ति आंदोलन के उद्‌भव विषयक मत

2.3 वैष्णव भक्ति : उद्‌भव और विकास

2.4 वैष्णव संप्रदाय : पांचरात्र मत

2.5 आल्वार संतों का प्रपत्ति सिद्धांत

2.6 अष्टछाप कवियों का पुष्टिमार्ग

तृतीय अध्याय – आल्वार संत : पर्यालोचन

3.1 आल्वार भक्ति का स्वरूप एवं समय

3.2 आल्वार संतों का साहित्यिक परिचय

पोयगै आल्वार, भूत्ततू आल्वार, पेयाल्वार, तिरुमलिशै आल्वर, नम्माल्वार, मधुर कवि आल्वार, कुलशेखर आल्वार, पेरियाल्वार, आण्डाल, तोण्डरअडिप्पोडि आल्वार, तिरुप्पाण आल्वार, तिरुमंगै आल्वार

3.3 आल्वार संतों का नालायिर दिव्य प्रबंधम्

3.4 श्रीमद्भागवत और नालायिर दिव्य प्रबंधम्

3.5 आल्वार संतों के काव्य का दार्शनिक आधार– ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष

3.6 दक्षिण भारत में वैष्णव भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि

3.6.1 दक्षिण भारत की राजनीतिक परिस्थितियाँ

3.6.2 दक्षिण भारत की सामाजिक परिस्थितियाँ

3.6.3 दक्षिण भारत की आर्थिक परिस्थितियाँ

3.6.4 दक्षिण भारत की धार्मिक परिस्थितियाँ

3.6.5 दक्षिण भारत की कलागत एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ

चतुर्थ अध्याय – अष्टछाप कवि : पर्यालोचन

4.1 अष्टछाप भक्ति का स्वरूप एवं समय

4.2 अष्टछाप कवियों का परिचय : वार्ताओं एवं भक्तमालों के अनुसार

सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, कृष्णदास, नंददास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भजदास

4.3 अष्टछाप कवि के काव्य का दार्शनिक आधार– ब्रह्म, जीव, जगत, माया, मोक्ष

4.4 उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि

4.4.1 उत्तर भारत की राजनीतिक परिस्थितियाँ

4.4.2 उत्तर भारत की सामाजिक परिस्थितियाँ

4.4.3 उत्तर भारत की आर्थिक परिस्थितियाँ

4.4.4 उत्तर भारत की धार्मिक परिस्थितियाँ

4.4.5 उत्तर भारत की कलागत एवं साहित्यिक परिस्थितियाँ

पंचम अध्याय : आल्वार संत पेरियाल्वार और अष्टछाप के कवि सूरदास का तुलनात्मक अध्ययन

5.1 आल्वार संत पेरियाल्वार के 'प्रबंधम्' एवं सूरदास के 'सूरसागर' का विवेचन

5.2 पेरियाल्वार एवं सूरदास के आराध्य का तुलनात्मक अध्ययन

5.2.1 आराध्य के प्रति विनीत भावना के पद

5.2.2 श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के पद

5.2.3 लोरी गीत की अवस्था के पद

5.2.4 चंद्रदर्शन के पद

5.2.5 प्रेम का संयोग एवं वियोग पक्ष

5.2.6 गोपियों की उलाहना के पद

5.2.7 गोचारण के पद

5.3 पेरियाल्वार और सूरदास की रामभक्ति

5.4 संत पेरियाल्वार की सांस्कृतिक मान्यताएं

5.5 अष्टछाप कवि सूरदास की सांस्कृतिक मान्यताएं

5.6 पेरियाल्वार एवं सूरदास की काव्य शैली का तुलनात्मक अध्ययन

- उपसंहार
- पुस्तकानुक्रमणिका